७२: शिक्षा में पूर्णता

दिनांक - १६-०७-२००१२

आदिकाल से ही हर मानव समझदार होने के पक्ष में सोचा है | समझदारी का किसी दूर तक हर व्यक्ति में अभिव्यक्ति है | अभिव्यक्ति के अर्थ में ही समझ को माना है | अभिव्यक्ति सर्वतोमुखी समाधान ही है | सर्वतोमुखी समाधान हुए बिना अभिव्यक्ति होता नहीं | इसी का नाम समाधान दिया है | अभिव्यक्ति का नाम | समाधान पूर्वक जीना एक प्रमाण है | सर्वतोमुखी समाधान होना वैभव है | मानव तृप्ति सर्वतोमुखी समाधान से ही है | समस्या से समाधान होने का सम्भावना नहीं है | समस्या से समाधान को खोजने का प्रक्रिया भी चालू है मानव मस्तिष्क में जबकि समस्या से समस्या ही पैदा होता है न कि समाधान | इसको ऐसा भी कह सकते हैं कि छोटा समस्या को बड़ा समस्या से ढक देना |

इसका प्राकृतिक उदाहरण यह मिलता है कि समस्या से समाधान पैदा नहीं होता है | समस्या से समस्या ही पैदा होता है | समाधान ही संतुलन का स्वरूप है | संतुलन लक्ष्य पूर्ति के अर्थ में ही है | लक्ष्य की पूर्ति में एक कड़ी कहा जा सकता है अथवा एक स्थिति कहा जा सकता है | इस क्रम से हम समाधान को वर सकते हैं | यह यांत्रिक प्रक्रिया नहीं है | यह संवेदनशील प्रक्रिया है | यांत्रिक प्रक्रिया में यह नाप तौल में आता नहीं | नाप तौल से ही लम्बाई चौड़ाई होती है | इस प्रकार से मानव फंस गया है | विज्ञान विधि नाप तौल से सम्बंधित है | इसी के आधार पर संख्यात्मक गणित को अपनाया है | इसका प्रयोजन विखण्डन में आया है |

विखण्डन का परमावधि विघटन ही हुआ | जैसा नाभिकीय विघटन ही आज का नईंधन का प्रधान वस्तु माना गया है | इसको एकत्रित करने का उपाय खोज लिये हैं प्रयोग भी खोजा है | इसमें विडंबना यही है कि शांतिपूर्ण कार्यक्रम के लिये इसका उपयोग होगा, ऐसा कहे हैं जबकि इसका सामरिक तन्त्र में ही सर्वाधिक प्रयोग हुआ है | इसी में से एक भाग ऊर्जा को उत्पादन करने के लिये प्रयोग करते हैं | इससे भारी प्रदूषण उत्पन्न होता है | प्रदूषण के चलते असंख्य रोगों का शिकार हो गया मानव, फसल सब शिकार हो गया, जीव मात्र सब शिकार हो गया | धरती निरुत्पादक होता जा रहा है | धरती में उर्वरकता घटती जा रही है | इसके मूल में सोचने पर पता लगता है कि जंगल से धरती उर्वरक हुआ है | जंगल का नाश आदिकाल से होता आया है, जिसको महान सभ्य युग माना जाता है | किन्तु जंगल का नाश उसी समय से शुरू हुआ है | इस ढंग से जंगल को नाश करने पर धरती में उर्वरकता कम होना स्वाभाविक है | उर्वरकता में क्षारीय, अम्लीय पदार्थ विशेष होता है | इसको सीधाबना कर लोग व्यापार में लगा दिए हैं, जिसे रासायनिक खाद कहा जाता है | रसायन खाद से अनेक रोग पैदा होता है, साथ में कीटनाशक दवा सर्वाधिक हानिकारक वस्तु है |

इसको सर्वाधिक व्यापार में लाभ के लिये पैसे वाले करते हैं | उपयोग करने वाले यह सोचते हैं कि गाडा में ले जाने वाला खाद को बोरी में भर कर ले जाने वाला बात सुगम हो गया, | इसके प्रयोग से धरती बीमार हो गया | इस बीमारी का नाम है धरती में उपजाऊ शक्ति का क्षीण होना | इस क्रम में मानव अपने को अपराधी स्वीकारना, होना स्वाभाविक रहा | साथ में नाभिकीय उपयोग से जो ऊष्मा पैदा होता है वह धरती में ही रहता है | फलस्वरूप धरती बुखारग्रस्त, तापग्रस्त होता ही है | अभी तक विज्ञानी मानते हैं कि नहीं मानते हैं; पता नहीं | इस आधार पर विज्ञान को सत्य कैसा माना जाय | विज्ञान हर बात को स्पष्ट करने का कथा है, हर राष्ट्र को यथार्थ में स्पष्ट करना | स्पष्टता का मतलब यथार्थ ही है | अभी तक यह बात नहीं हो पायी

है और गुमराह करना ही हुआ है | धरती पर जितने भी नभिकीय प्रयोग हुआ उसमें से आधा से अधिक अमेरिका किया है | बाकी संसार सब मिलकर आधा किये हैं | नभिकीय प्रयोग में जो ऊष्मा निकलता है वह सब धरती में ही समाता है | इससे धरती में बुखार होना स्वाभाविक हो गया | धरती बीमार होना बुखारग्रस्त होने के रूप में तथा प्रदूषण छा जाना खनिज कोयले, खनिज तेल से होना स्पष्ट हो चुका है | इसमें हम चाहे जितना भी बहस करें, घटना घटित होने का मूल तत्व इतना ही है | इस पर ध्यान देने की आवश्यकता है | इस बात को शिक्षा में समाहित करना, समाज में प्रमाणित होना ही शिक्षा में पूर्णता है |

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याण हो!

ए. नागराज